



— 28/10/86

# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4  
PART III—Section 4

प्रधानमंत्री से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 12]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 9, 1986/भाद्रपद 18, 1908

No. 12]

NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 9, 1986/BHADRA 18, 1908

इस भाग में भिन्न वृष्टि संबंधी वीजाति है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

**Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as  
a separate compilation**

दी हस्टीट्यूट ऑफ एप्प्ली कंट्रोलरीज आफ इंडिया

(कम्पनी भवित्व प्रतिनियम, 1980 के अधीन गठित)

[कम्पनी भवित्व (संशोधन) विनियम, 1986]

(प्रतिनियम, 1986 का घोर्हे सी एग फार्ड में -1)

नई दिल्ली, ५ प्रतिनियम, 1986

सं. 710(2)(एम) (1).—कंपनी भवित्व अधिनियम, 1980 (1980 का 50) की धारा 30 की उपर्याता (3) के भाषण पठित उपर्याता (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, भारतीय कंपनी भवित्व संस्थान की परिषद् द्वारा प्रतिनियत कंपनी राजिका (संशोधन) विनियम, 1986 का निम्नलिखित प्राप्त, इन विनियमों से प्रभावित होने वाले शक्तियों की जानकारी के लिए, प्रकाशित किया आता है तथा एतत् द्वारा सूचना दी जाती है कि इन प्रधिसूचना की तारीख में 45 दिन पश्चात् प्राप्त पर विधार किया जायेगा।

उपरोक्त प्राप्ति के सबध में विनियित तारीख में पूर्व किसी भी व्यक्ति से प्राप्त आवेदन पर दी हस्टीट्यूट ऑफ कंपनी कंट्रोलरीज आफ इंडिया की परिषद् द्वारा विचार किया जायेगा।

### प्रस्तावित विनियम

1. इन विनियमों का संभिल भास कंपनी सक्षिक (संशोधन) विनियम, 1986 है।

2. इन विनियमों में जैसा प्रभावित है उसके विवाय, ये विनियम भारत के राजपत्र में प्रकाशित होंगे तारीख से प्रारूप होंगे।

3. कंपनी भवित्व विनियम, 1982 के विनियम 18 (जिन्हे इसमें इसके पश्चात् उक्त विनियम कहा गया है) ---

(क) उपविनियम (1) में "संस्थान की प्रतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले प्रत्येक प्रभावी से" शब्दों के स्थान पर "उपविनियम (3) के उपर्यातों के भारीन रूप हुए प्रत्येक प्रभावी से (जिसके भारीन तारीख से रजिस्ट्रीकूट प्रभावी भी है) जो 16 सितंबर 1982 को या उसके पश्चात् विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीकूट हुआ है और जिसने संस्थान की प्रतिम परीक्षा उत्तीर्ण करली है तथा ऐसे प्रत्येक प्रभावी से जो 16 सितंबर, 1982 से पहले विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीकूट हुआ है और जिसने विनियम 50 में विनियित व्यावहारिक प्रशिक्षण संस्थान की प्रतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि में पूर्ण नहीं किया है," प्राप्त रखे जाएंगे।

(ख) उपविनियम (2) के पश्चात्, निम्नलिखित उपविनियम वृत्तः-  
स्थापित किया जाएगा :—

"(3) ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में, जो 16 सितंबर, 1982 को या उसके पश्चात् और 29 दिसम्बर, 1985 तक (जिसमें वह तारीख भी सम्मिलित है) विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीकूट हुआ है, यह समझा जाएगा कि उसने इस विनियम में विनियित व्यावहारिक प्रशिक्षण संस्थान की प्रतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के भीतर

उपनियम (1) के खण्ड (क) के उपबंध (1) में विनियम दिल्ली रीति में या 30 दिसंबर, 1993 के पूर्व, दोनों में से जो भी पूर्वमत हो, किसी कार्यपालक के रूप में कार्य करने का अनुभव जो एक वर्ष से कम का नहीं है, प्राप्त कर लिया है।

परन्तु परिषद् इस अधिकारी को प्रशिक्षनम वीर वर्ष की अधिकारी के नियमित कर सकती, जिसके कारण लेखाबद्ध किये जाएंगे।"

4. उक्त विनियम के विनियम 50 में, "व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने" संबंधी के पश्चात्, "जहाँ सामूहिक", शब्द अंतर्स्थापित किए जाएंगे।

परिषद् के प्रावेशानुसार,

टी. पी. सुब्बारामन, सचिव एवं कार्यकारी निदेशक  
संघीकरण टिप्पण

व्यावहारिक अनुभव और प्रशिक्षण विषयक अपेक्षाओं से संबंधित विनियम 30-12-1985 से संशोधित कर दिए गए हैं, [कंपनी सचिव (संशोधन) विनियम, 1985 देखिये]।

वर्ष 1985 में किए गए संशोधनों के परिणामस्वरूप, संस्थान की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सभी अभ्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे विनियम 48 और 50 में यथा अधिकारित व्यावहारिक अनुभव और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करें।

वर्ष 1985 के संशोधन से पूर्व, 16 सितंबर, 1982 के पूर्व विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीड अभ्यार्थी से यह अपेक्षा नहीं की जाती थी कि उसके पास कोई व्यावहारिक अनुभव हो और उससे यही अपेक्षा की जाती थी कि वह केवल 4 माह का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करे।

16 सितंबर, 1982 से विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीड अभ्यार्थी के बारे में भी यह समझा जाता था कि उसने व्यावहारिक अनुभव मंबंधी अपेक्षाओं की पूर्ति कर दी है यदि उसके पास किसी कंपनी के, जिसकी समावृत्त पूरी पंचीस लाख रुपए से कम नहीं है, साचिविक, प्रशासनिक, विधि, कार्मिक, वित्त या लेखा विभाग का, किसी पर्यवेक्षी हैंसियत में एक वर्ष का व्यावहारिक अनुभव है।

उक्त दो प्रबंधों के अंतर्गत वाले अभ्यार्थियों से इस बाबत बहुत से अभ्यार्थित प्राप्त हुए हैं कि वर्ष 1985 में किए गए संशोधनों का उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और यह कि उससे अपेक्षा की गई है कि वे वर्ष 1985 के संशोधन से पूर्व यथा विद्यामान व्यावहारिक अनुभव और व्यावहारिक प्रशिक्षण संबंधी अपेक्षाओं की पूर्ति करें।

जहाँ तक कि व्यावहारिक अनुभव और व्यावहारिक प्रशिक्षण संबंधी अपेक्षाओं का संबंध है प्रस्तावित संशोधनों का उद्देश्य पूर्ववर्ती विद्यार्थियों की बाबत यथापूर्व स्थिति बहाल करता है।

#### THE INSTITUTE OF COMPANY SECRETARIES OF INDIA

(Constituted under the Company Secretaries Act,  
1980)

The Company Secretaries (Amendment) Regulations,  
1986

(ICSI No. 1 of September, 1986)

New Delhi, the 9th September, 1986

No. 710(2)(M)(1).—The following draft of the Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1986 proposed to be made by the Council of the Institute of Company Secretaries of India in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of

section 39 of the Company Secretaries Act, 1980 (56 of 1980) read with sub-section (3) thereof is published for information of persons likely to be affected thereby and notice is hereby given that the draft will be taken up for consideration after the expiry of 45 days from the date of its notification.

Any objection or suggestion which may be received from any person with respect to the said draft, before the dates specified, will be considered by the Council of the Institute of Company Secretaries of India.

#### DRAFT REGULATIONS

1. These regulations may be called "The Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1986".

2. Save as otherwise provided in these regulations, these regulations shall come into force from the date of their publication in the Gazette of India.

3. In regulation 48 of the Company Secretaries Regulations, 1982 (hereinafter referred to as the said regulations) :—

(a) in sub-regulation (1), for the words "Every candidate passing the Final examination of the Institute", the words "Subject to the provisions of sub-regulation (3), every candidate registered as a student on or after the 16th September, 1982 (including a student registered de novo) and passing the Final examination of the Institute and every candidate registered as a student before the 16th September, 1982 who has not completed practical training referred to in regulation 50 within a period of three years after the date of passing the Final examination of the Institute", shall be substituted;

(b) after sub-regulation (2), the following sub-regulation shall be inserted, namely :—

"(3) Any person registered as a student on or after the 16th September, 1982 and up to and including 29th December, 1985 shall be deemed to have complied with the practical experience requirement specified in the regulation if he possesses not less than one year's experience as an executive in the manner specified in sub-clause (i) of clause (a) of sub-regulation (1) within a period of three years after the date of passing the Final examination or before 30th December, 1993, whichever is earlier.

Provided that the Council may, for reasons to be recorded in writing, further extend this period upto a maximum of two years."

4. In regulation 50 of the said regulations, after the words "in addition to acquiring practical experience" the words "where applicable" shall be inserted.

By Order of the Council,  
T. P. SUBBARAMAN, Secy.  
& Executive Director.

### EXPLANATORY NOTE

Regulations pertaining to Practical experience and training requirements were amended w.e.f. 30-12-85 vide Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1985.

Consequent upon the amendments made in 1985, all candidates passing the final examination of the Institute are required to possess practical experience and undergo practical training as laid down in Regulations 48 and 50.

Prior to the 1985 amendment, a candidate registered as a student before 16th September, 1982 was not required to possess any practical experience and was required to undergo four months practical training only.

Also a candidate registered as student w.e.f. 16th September, 1982 and before 30-12-1985 was deemed

to satisfy the practical experience requirements if he possessed one year practical experience in a supervisory position in the secretarial, administrative, legal, personnel, finance or accounts departments in any company having a paid-up capital of not less than rupees twenty five lakhs.

There have been many representations from candidates falling under the above two categories that the amendments made in 1985 have adversely affected them and that they should be provided reasonable time and opportunity to comply with the requirements relating to practical experience and practical training as existed prior to the 1985 amendments.

The proposed amendments seek to restore the status quo ante to the students registered earlier to 30-12-1985 as regards the practical experience and practical training requirements.

